मुक्ति समाचार

जून-2026
RNI/Regd. No. 27158/75
वर्ष-53 अंक 06
मासिक मूल्य 12/-

Content / विषय सूची

- परमेश्वर पिता का प्रेम
  मेजर अनिल मसीह, *लिटरेरी ऑफिसर*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- एक अच्छे पिता का अनुकरणीय जीवन
  लेफ्टिनेंट कर्नल मुद्दा अब्राहम लिंकन
  चीफ सेक्रेटरी,
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- परिवार में आत्मिक विकास
  लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता रॉबर्ट
  टैरिटोरियल सेक्रेटरी फॉर स्पिरिचुअल लाइफ, डेवलपमेंट, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- अपने विश्वास को पोषित करें, अपने डर को नहीं
  लेफ्टिनेंट कर्नल इमैनुएल मसीह
  सेक्रेटरी फॉर पर्सनेल एडमिनिस्ट्रेशन
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- पतरस और तलवार : एक गहरी सोच
  मेजर रॉबिन, *चर्च ग्रोथ सेक्रेटरी,*
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- वह पिता जो प्रेम से नेतृत्व करता है।
  श्रीमती सीमा खोखर
  आईटी कोऑर्डिनेटर,
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली
- फल लाना
  मेजर हबीब मसीह
  डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर, पठानकोट
- फादर्स डे (पिता का दिन)
  लैफ्टि. अलिशा
  गुज्जा पीर कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन
- क्रूस की शक्ति : पाप से मुक्ति का मार्ग
  लैफ्ट. अनुज कुमार
  कोर कमांडिंग ऑफिसर
  खैलम कोर, बरेली डिवीजन

अनुभव/गवाही/रिपोर्ट :

- इंटरनेशनल डे ऑफ चिल्ड्रन एंड यंग पीपल दिल्ली सिटाडल कोर में
  कैप्टन राजेश मसीह
  दिल्ली सिटाडल कोर, नई दिल्ली
- बाईबल ओरेटोरिकल प्रतियोगिता
  लैफ्ट. अलीशा विशाल राज
  कोर कमांडिंग ऑफिसर,
  क्यारा कोर, बरेली डिवीजन
- लीग ऑफ मर्सी सभा
  लैफ्ट. अलीशा विशाल राज
  कोर कमांडिंग ऑफिसर,
  क्यारा कोर, बरेली डिवीजन
- अंतराष्ट्रीय बाल एवं युवा दिवस
  लैफ्ट. अनुज कुमार
  कोर कमांडिंग ऑफिसर,
  खैलम कोर, बरेली डिवीजन
- मेरे जीवन का अनुभव
  मेजर अजीत मैसी
  पब्लिक एवं एक्युमेनिकल रिलेशन्स ऑफिसर / इमरजेंसी ऑफिसर,
  उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

The Love of God the Father

परमेश्वर पिता का प्रेम

परमेश्वर का प्रेम केवल एक आत्मिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक जीवित और अनुभव करने योग्य सत्य है, जिसे हम यीशु मसीह के जीवन के माध्यम से स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। जब हम परमेश्वर को **"पिता"** के रूप में संबोधित करते हैं, तो यह मात्र एक उपमा नहीं, बल्कि एक गहरे और जीवंत रिश्ते की अभिव्यक्ति है – एक ऐसा संबंध जिसमें सुरक्षा, करूणा, क्षमा, और अटूट प्रेम समाहित है।

यीशु ने अपने जीवन और शिक्षाओं के द्वारा हमें यह बताया कि परमेश्वर केवल एक न्यायी प्रभु ही नहीं, बल्कि एक दयालु पिता भी है। उसने बार-बार लोगों को समझाया कि जैसे एक पिता अपने भटके हुए पुत्र को प्रेम पूर्वक वापस स्वीकार करता है, वैसे ही परमेश्वर हमें हर बार अपनाने के लिए तैयार रहता है। उड़ाऊ पुत्र *(Prodigal Son)* की कहानी इस पितृवत प्रेम का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करती है – जहाँ पिता अपने लौटे हुए पुत्र को बिना किसी शर्त के गले लगाता है और उसका स्वागत करता है।

यीशु के कार्यों में हम परमेश्वर के पितृहृदय की स्पष्ट झलक देखते हैं। जब उसने बीमारों को चंगा किया, भूखों को भोजन दिया और पापियों को क्षमा किया, तब वह यह प्रकट कर रहे थे कि परमेश्वर अपने बच्चों के दु:ख को समझता है और उनकी हर आवश्यकता का ध्यान रखता है। उसके प्रत्येक कार्य से यह सिद्ध होता है कि परमेश्वर का प्रेम केवल शब्दों तक सीमित नहीं, बल्कि क्रियाशील और जीवंत है।

सबसे बढ़कर, यीशु का क्रूस पर बलिदान परमेश्वर के पितृवत का प्रदर्शन है। एक पिता ने अपने एकलौते पुत्र को संसार के उद्धार के लिए दे दिया, ताकि हम सब उसके सन्तान कहलाएँ और अनन्त जीवन प्राप्त करें। यह प्रेम त्याग, करूणाऔर अनुग्रह का सर्वोच्च उदाहरण है।

इसलिए, जब हम यीशु को देखते हैं, तो हम केवल एक शिक्षक या उद्धारकर्त्ता ही नहीं, बल्कि परमेश्वर के पिता-संबंधी प्रेम का सजीव प्रतिबिंब देखते हैं। हमें इस प्रेम को स्वीकार करके अपने

जीवन में उतारना चाहिए, ताकि हम भी दूसरों के प्रति वही करूणा और प्रेम प्रकट कर सकें, जैसा हमारा स्वर्गीय पिता हमसे करता है।

पितृ दिवस के इस विशेष अवसर पर काश हम अपने स्वर्गीय पिता के असीम प्रेम को याद रखें और एक दुनियावी पिता होने के नाते अपने बच्चों को वचन के अनुसार परवरिश दें। बाईबल कहती है, ***"जैसे पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने भय मानने वालों पर दया करता है।"*** (भजन संहिता 103:13)

परमेश्वर का प्रेम हमें हर परिस्थिति में संभालता है – चाहे हम आनन्द में हो या दु:ख में, सफलता में हो या संघर्ष में। वह हमें मार्ग दिखाता है, शिक्षा देता है, और जब हम गिरते हैं, तो हमें उठाकर अपने प्रेम में ढाँप लेता है। एक सच्चे पिता की तरह वह हमें अनुशासन भी देता है, ताकि हम सही मार्ग पर चलें। (इब्रानियों 12:6)

यीशु मसीह के द्वारा हम इस पितृवत प्रेम का विशेष अनुभव करते हैं। उसने हमें सिखाया कि हम परमेश्वर को "अब्बा, पिता" पुकार सकते हैं – एक ऐसा संबोधन जो निकटता, विश्वास और आत्मीयता को दर्शाता है। (रोमियों 8:15)

इस पितृ दिवस पर, आइए हम अपने स्वर्गीय पिता के प्रेम के लिए धन्यवाद करें और अपने संसारिक पिताओं का भी सम्मान करें, जा हमारे जीवन में उस ईश्वरीय प्रेम की परछाई है।

परमेश्वर का प्रेम हमें प्रतिदिन नई आशा, शांति और सुरक्षा प्रदान करें। "आमीन"

मेजर अनिल मसीह
लिटरेरी ऑफिसर
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

A Good Father's Exemplary Life

एक अच्छे पिता का अनुकरणीय जीवन

हर पिता को एक अनुकरणीय जीवन जीना चाहिए। सवाल यह नहीं है कि आप कोई विरासत छोड़ेंगे या नहीं, बल्कि यह है कि आप किस तरह का आदर्श छोड़ रहे हैं। हमारा समाज अक्सर आदर्श को भौतिक विरासत-संपत्ति, पैसा, रुतबे-से जोड़कर देखता है। लेकिन पवित्र-शास्त्र एक ज़्यादा समृद्ध और गहरा चित्र प्रस्तुत करता है: एक ईश्वरीय आदर्श का मतलब है कि हम अपने बच्चों और नाती-पोतों के दिलों, दिमागों और आत्माओं में क्या संचित करते हैं।

नीतिवचन 13:22 हमें बताता है, ***"भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये सम्पत्ति छोड़ जाता है, परन्तु पापी की सम्पत्ति धर्मी के लिये रखी जाती है।"*** यह विरासत सिर्फ आर्थिक नहीं है; इसमें मूल्य, बुद्धि, विश्वास और उदाहरण शामिल हैं। इस 'फादर्स डे' पर, आइए हम विचार करें कि हम दिन-ब-दिन किस तरह की विरासत गढ़ रहे हैं। आप अपने पीछे क्या छोड़ रहे हैं?

1. एक अच्छा पिता विश्वास का एक आदर्श छोड़ता है :

व्यवस्थाविवरण 6:6-7, ***"और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बाल-बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।"***

किसी भी स्थायी आदर्श की नींव विश्वास से शुरू होती है। परमेश्वर पिताओं को आज्ञा देता है कि वह उसके वचन को अपने बच्चों के दिलों में बिठाएँ-कभी-कभार नहीं, बल्कि लगातार, रोजमर्रा के जीवन में। यह सिर्फ रविवार सुबह का विश्वास नहीं है, बल्कि हफ्ते के बाकी दिनों की शिष्यता है। बच्चे यह नहीं सीखते कि हम चर्च में क्या कहते हैं, बल्कि वे यह सीखते हैं कि हम घर पर कैसे रहते हैं-और हम सचमुच किस बात पर विश्वास करते हैं।

- परिवार के साथ प्रार्थना करने या बाईबल पढ़ने के लिए एक नियमित समय तय करें, भले ही वह थोड़ा ही क्यों न हो।
- अपने बच्चों के साथ अपने निजी अनुभव (गवाहियाँ) साझा करें। उन्हें देखने दें कि परमेश्वर ने आपके जीवन में कैसे काम किया है।
- अपने परिवार को चर्च के जीवन में और दूसरों की सेवा करने में साथ-साथ शामिल करें।

जो विश्वास लगातार जिया जाता है, वह दूसरों में भी फैल जाता है। आपके बच्चे शायद आपकी सलाह भूल जाएँ, लेकिन वे आपके उदाहरण को कभी नहीं भूलेंगे।

2. एक अच्छा पिता चरित्र का आदर्श छोड़ता है।

नीतिवचन 20:7, ***"धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके बाल-बच्चे धन्य होते हैं।"***

एक पिता की ईमानदारी, पीढ़ियों तक मिलने वाले आशीर्वाद के लिए सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक है। बच्चे आपको देख रहे हैंख्रआप उनकी माँ के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, आप दबाव को कैसे संभालते हैं, जब कोई नहीं देख रहा होता तो आप कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। जब कोई पुरुष नेकी का रास्ता चुनता है, तो उसके बच्चों को आशीष मिलती है। इसलिए नहीं कि वह एकदम सही है, बल्कि इसलिए कि वह अपने रास्ते पर कायम रहता है और अपनी गलतियों के लिए पछतावा करता है।

- जब आप गलत हों तो तुरंत माफी माँगने के लिए तैयार रहें। यह विनम्रता और विकास का एक उदाहरण पेश करता है।
- अपनी जबान पर कायम रहें। आपके वायदे मायने रखते हैं, खासकर एक बच्चे के लिए।
- पाखंड से बचें-जो आप दूसरों को सिखाते हैं, उसे खुद भी अपने जीवन में लागू करें।

आज आप अपने चरित्र से जो कुछ भी बनाते हैं, वह कल आपके बच्चों के लिए एक सुरक्षित पनाहगाह या फिर बर्बादी का कारण बन सकता है।

3. एक पिता प्रेम का एक आदर्श छोड़ जाता है।

भजन संहिता 103:13, ***"जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।"***

आज परिवारों में सबसे बड़ी जरूरतों में से एक है-प्रेम करने वाले और अपने परिवार से जुड़े हुए पिताओं की उपस्थिति। सिर्फ शारीरिक रूप से मौजूद रहना ही काफी नहीं है, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से भी परिवार में शामिल होना जरूरी है। पिता के रूप में परमेश्वर का उदाहरण हमें दया, समझ और गहरी देखभाल सिखाता है। हमारे बच्चों को हमारी दी हुई भौतिक चीजों से कहीं ज्यादा हमारी जरूरत है-उन्हें हमारे ध्यान, हमारी हँसी और हमारे सुनने वाले कानों की जरूरत है।

- हर बच्चे के साथ अकेले में समय बिताने के लिए सोच-विचार कर समय निकालें।
- काम के बाद घर पर उपलब्ध रहें-सिर्फ शरीर से ही नहीं, बल्कि पूरे ध्यान और एकाग्रता के साथ।
- उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाएँ, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों।

आपकी उपस्थिति यह संदेश देती है कि आप उन्हें कितना महत्व देते हैं। एक बच्चे का आत्म-सम्मान अक्सर उस समय और रुचि से तय होता है जो उसके पिता उसे देते हैं।

निष्कर्ष :

एक अच्छे पिता का अनुकरणीय जीवन किसी वसीयत में नहीं लिखा जाता-बल्कि यह रोजमर्रा के फैसलों में रचा-बसा होता है। इसकी परिभाषा इस बात से तय नहीं होती कि हम बैंक में अपने पीछे कितना पैसा छोड़ जाते हैं, बल्कि इस बात से तय होती है कि जिन लोगों के जीवन को हम छूते हैं, उनमें हम परमेश्वर का कितना अंश छोड़ जाते हैं। आज, जब हम पिताओं का सम्मान कर रहे हैं, तो आइए हम एक ऊँचे उद्देश्य की ओर बढ़ें: ऐसे पुरुष बनें जो अपने पीछे विश्वास, चरित्र और प्रेम का एक आदर्श छोड़ जाएँ। आज ही शुरुआत करें। जहाँ आप अभी हैं, वहीं से शुरू करें। आपके जीवन का आदर्श अभी इसी पल गढ़ा जा रहा है। परमेश्वर करे कि आपके बच्चे और आपके बच्चों के बच्चे बड़े होकर आपको आशीष दें-इसलिए नहीं कि आप एकदम सही थे, बल्कि इसलिए कि आपने उन्हें एक परिपूर्ण परमेश्वर की ओर निर्देशित किया।

पिताओ, थोड़ा समय निकालकर इस बात का मूल्यांकन करें कि आप समझ-बूझकर अपने बच्चों को क्या विरासत में दे रहे हैं। किसी एक क्षेत्र को चुनें-जैसे विश्वास, चरित्र या प्रेम-और उसमें एक ऐसा ठोस और स्पष्ट बदलाव लाएँ जो आपको एक ईश्वरीय आदर्श बनने की दिशा में आगे बढ़ाए। आप हर गुजरते दिन के साथ भविष्य को आकार दे रहे हैं। अपने इस प्रयास को सार्थक बनाएँ। परमेश्वर सभी पिताओं को आशीष दे कि वे अपने बच्चों के लिए जीवन का एक आदर्श बनें।

लेफ्टिनेंट कर्नल मुद्दा अब्राहम लिंकन
चीफ सेक्रेटरी,
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Spiritual Development in the Family

परिवार में आत्मिक विकास

परिवार परमेश्वर की एक अद्भुत योजना है, जहाँ प्रेम, विश्वास और आत्मिक विकास की नींव रखी जाती है। बाईबल हमें सिखाती है कि एक मजबूत और आशिषित परिवार वही है जो परमेश्वर के वचन पर आधारित होता है। आत्मिक विकास केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि पारिवारिक जीवन का भी महत्वपूर्ण अंग है।

व्यवस्था विवरण6:6-7 में लिखा है कि परमेश्वर के वचनों को अपने हृदय में धारण करो और उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। इसका अर्थ है कि माता-पिता की जिम्मेदारी है कि वह अपने बच्चों का पालन-पोषण केवल संसारिक ज्ञान में ही नहीं, बल्कि आत्मिक सच्चाई में भी करें। जब परिवार मिलकर प्रार्थना करता है, बाईबल पढ़ता है और परमेश्वर की आराधना करता है, तब घर एक आत्मिक विद्यालय बन जाता है।

आत्मिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार प्रेम और क्षमा है। कुलुस्सियों 3:13-14 हमें सिखाता है कि हम एक-दूसरे के दोष सहें और एक-दूसरे को क्षमा करें, जैसे प्रभु ने हमें क्षमा किया। जब परिवार के सदस्य एक दूसरे के प्रति धैर्य और करूणा रखते हैं, तब परमेश्वर का प्रेम उस घर में प्रकट होता है।

इसके अतिरिक्त, आत्मिक अनुशासन भी आवश्यक है। नियमित प्रार्थना, वचन पर मनन और मसीही संगति परिवार को भीतर से मजबूत करते हैं। यह न केवल विश्वास को गहरा करता है, बल्कि कठिन परिस्थियों में भी स्थिर रहने की शक्ति देता है।

यहोशू 24:15 में यहोशू कहता है, ***"मैं और मेरा घराना यहोवा की सेवा करेंगें।"*** यह वचन हमें प्रेरित करता है कि हम अपने परिवार को परमेश्वर की ओर अग्रसर करें और उसे आत्मिक रूप से सशक्त बनाएँ।

अतः, आइए हम अपने परिवारों को परमेश्वर के प्रेम, वचन और मार्गदर्शन में बढ़ने दें, ताकि हमारा घर एक आशिष, शांति और आत्मिक उन्नति का केंद्र बन सके।

परमेश्वर आप सभी को बहुतायत से बरकत दे। आमीन

लेफ्टिनेंट कर्नल सुनीता रॉबर्ट
टैरिटोरियल सेक्रेटरी फॉर स्पिरिचुअल लाइफ डेवलपमेंट
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Feed Your Faith, Not Your Fear

अपने विश्वास को पोषित करें, अपने डर को नहीं

इस दुनिया में दो बहुत शक्तिशाली ताकतें **"विश्वास और डर"** बहुत सक्रिय रूप से काम कर रही हैं। इस अंतिम समय में, आप किन ताकतों से ज्यादा प्रभावित हैं? विश्वास आपके डर को दूर कर सकता है, जबकि डर एक और डर को जन्म देगा।

आइए हम स्वयं की जाँच करें कि हम किस शक्ति को ज्यादा पोषित करते हैं :

अतीत का डर, वर्तमान का डर, भविष्य का डर, स्वास्थ्य का डर, जादू-टोने का डर, बुराई का डर, नौकरी या सेवकाई का डर, आंतरिक डर और बाहरी डर।

ऊपर बताए गए सभी प्रकार के डरों के बावजूद विश्वास रखना आपको हर चीज से मुक्त कर देता है। 'Faith' (विश्वास) शब्द में पाँच अक्षर हैं और 'Fear' (डर) शब्द में चार अक्षर हैं; इसलिए इसे इस तरह समझा जाना चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति बिना किसी संदेह के अपने विश्वास को पोषित करना चाहता है, तो वह निश्चित रूप से डर को हरा देगा।

हर विश्वासी को ऐसे पलों का सामना करना पड़ता है जब डर उसकी जिंदगी की बागडोर अपने हाथ में लेने की कोशिश करता है। डर फुसफुसाता है, **"तुम यह नहीं कर सकते," "तुम अकेले हो," "यह कभी सफल नहीं होगा।"** लेकिन पवित्र शास्त्र बार-बार हमें अपने विश्वास को मजबूत करने के लिए कहता है, न कि अपने डर को बढ़ावा देने के लिए। जिसे आप भोजन देते हैं, वह बढ़ता है। जिसे आप भूखा रखते हैं, वह मर जाता है।

1. **डर असली है, लेकिन परमेश्वर उससे कहीं महान है।**
   डर कोई कोरी कल्पना नहीं है; बाईबल के बड़े-बड़े नायकों ने भी डर का सामना किया था। बाईबल का वचन: ***"क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।"*** 2 तीमुथियुस 1:7, डर परमेश्वर की ओर से नहीं आता। उसका आत्मा साहस, स्पष्टता और शांति उत्पन्न करता है। जब हम डर को बढ़ावा देते हैं, तो वह हमें अपाहिज बना देता है। जब हम विश्वास को बढ़ावा देते हैं, तो वह हमें सामर्थ्य देता है।

2. **विश्वास परमेश्वर के वचन को ग्रहण करने से आता है।**
   विश्वास अपने आप नहीं आ जाता; यह उन चीजों से बढ़ता है जिन्हें हम आध्यात्मिक रूप से ग्रहण करते हैं। बाईबल का वचन: ***"इसलिए विश्वास सुनने से, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है।"*** रोमियों 10:17, ***"यदि आप लगातार बुरी खबरें, निराशाजनक बातें या चिंता भरे विचार ग्रहण करते रहते हैं, तो डर बढ़ता है। पवित्र शास्त्र, आराधना, प्रार्थना, गवाहियों और परमेश्वर के वायदों को ग्रहण करें-तब विश्वास बढ़ता है।"***

3. **आपका ध्यान ही आपके भविष्य को निर्धारित करता है।**
   जिस चीज पर आप ध्यान केंद्रित करते हैं, वह और अधिक बढ़ जाती है। पतरस तब तक पानी पर चलता रहा, जब तक उसकी नजर यीशु पर टिकी रही। जब उसने

तूफान की ओर देखा, तो वह डूबने लगा। बाईबल का वचन: ***"परन्तु जब उसने हवा को देखा, तो वह डर गया और डूबने लगा; तब उसने चिल्लाकर कहा, 'हे प्रभु, मुझे बचा!'"*** मत्ती 14:30, ***"विश्वास यीशु की ओर देखता है; डर हवा की ओर देखता है। आपका ध्यान ही यह तय करता है कि आप पानी पर चलेंगे या डूब जाएँगे।"***

4. **परमेश्वर आपके साथ है-ठीक इसी पल**

   डर अक्सर परमेश्वर की उपस्थिति को भूल जाने के कारण पैदा होता है। पवित्र शास्त्र बार-बार कहता है, ***"डरो मत... क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।"*** बाईबल का वचन: ***"मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ; हताश मत हो, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ।"*** यशायाह 41:10

   आप यह दिखावा करके डर पर काबू नहीं पा सकते कि डर मौजूद ही नहीं है। आप इस बात को याद करके डर पर काबू पाते हैं कि आपके साथ कौन है।

5. **विश्वास वही कहता है जिसे डर चुप कराने की कोशिश करता है।**

   विश्वास चुप नहीं रहता-यह परिस्थितियों से कहीं ज्यादा जोर से परमेश्वर के सत्य की घोषणा करता है। बाईबल का वचन: ***"मैंने विश्वास किया; इसलिए, मैंने बोला।"*** 2 कुरिन्थियों 4:13, ***परमेश्वर के वायदों को बोलें: "यहोवा मेरा चरवाहा है।" "वह मेरा शरणस्थान और मेरी शक्ति है।" "सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं।"*** आपके शब्द या तो विश्वास को पोषण देते हैं या डर को।

6. **अपने विश्वास को प्रतिदिन पोषण दें।**

   जिस तरह शारीरिक भोजन आपके शरीर को जीवित रखता है, उसी तरह आत्मिक भोजन आपकी आत्मा को मजबूत करता है। अपने विश्वास को इन चीजों से पोषण दें: परमेश्वर का वचन, प्रार्थना, आराधना, संगति, परमेश्वर की शुक्रगुजारी, आपके जीवन, परिवार, सेवकाई और कई अन्य बातों में परमेश्वर की वफादारी की गवाहियाँ।

अपने डर से कैसे बचें: *खुद से नकारात्मक बातें करना, लगातार चिंता करना, ज्यादा सोचना, जहरीले प्रभाव, सबसे बुरे हालात के बारे में सोचते रहना, जितना सोचना चाहिए उससे ज्यादा सोचना।*

अंत में, हम सभी के पास हमेशा एक चुनाव होता है-या तो विश्वास को पोषण दें या डर को। याद रखें, डर हमेशा दरवाजा खटखटाएगा, लेकिन उसे अपने मन, शरीर और आत्मा में प्रवेश न करने दें। जबकि विश्वास हमेशा बढ़ेगा, बशर्ते आप अपने विश्वास को लगातार पोषण देते रहें। बाईबल कहती है, ***"जब मैं डरता हूँ, तो मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।"*** भजन संहिता 56:3। मेरे प्यारे पाठकों, कृपया परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करें, अपने विश्वास को पोषण दें, और यीशु के सामर्थी नाम में आपके जीवन से डर अपनी शक्ति खो देगा।

मैं सभी ऑफिसरों, मुक्ति फौजियों और मित्रों से अनुरोध करता हूँ कि वह अपने विश्वास को लगातार पोषण देते रहें, ताकि बुरी चीजों का डर आज और अनंतकाल तक आप पर कोई प्रभाव न डाल सके। धन्यवाद,

आपका विश्वासी,

लेफ्टिनेंट कर्नल इमैनुएल मसीह
सेक्रेटरी फॉर पर्सनेल एडमिनिस्ट्रेशन
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Peter and the Sword : A Deeper Reflection

पतरस और तलवार : एक गहरी सोच

जैसा कि पहले बताया गया है, यीशु की गिरफ्तारी के दौरान प्रेरित पतरस ने मलखुस का कान काट दिया था। पहली नजर में, यह हिंसा का एक साधारण काम लग सकता है। हालाँकि, जब इसे थोड़ा करीब से देखा जाए, तो यह कहीं ज्यादा गहरा है – शक्ति, न्याय और वफादारी के दो पूरी तरह से अलग नजरियों के बीच एक टकराव।

कान का महत्व :

कान एक बहुत जरूरी अंग है, जो न केवल सुनने के लिए बल्कि संतुलन बनाए रखने के लिए भी जरूरी है। इसके तीन मुख्य भाग होते हैं :

- बाहरी कान – ध्वनि तरंगों को इकट्ठा करता है और उन्हें कान की नली में भेजता है।
- मध्य कान – छोटी हड्डियों के जरिए कंपन को आगे भेजता है।
- आंतरिक कान – इन कंपन को ऐसे संकेतों में बदलता है जिन्हें दिमाग ध्वनि के रूप में समझ सकता है।

सुनने के अलावा, आंतरिक कान में अर्धवृत्ताकार नलिकाओं जैसी संरचनाएँ होती हैं, जो हलचल का पता लगाने और संतुलन बनाए रखने में मदद करती हैं। कान के ठीक से काम न करने पर, किसी व्यक्ति को बातचीत करने, तालमेल बिठाने और अपने आस-पास की चीजों को समझने में दिक्कत हो सकती है।

इस तरह, कान सिर्फ एक शारीरिक अंग से कहीं ज्यादा है – यह जागरूकता, समझ और स्थिरता का प्रतीक है।

पतरस के अंदर का टकराव :

पतरस का काम उसके अंदर चल रहे गहरे संघर्ष को दिखाता है। वह यीशु से प्यार करता था और उस पर विश्वास करता था, फिर भी वह यह नहीं समझ पा रहा था कि मसीहा बिना कोई विरोध किए खुद को गिरफ्तार कैसे होने दे सकता है।

कोई भी पतरस के विचारों की कल्पना कर सकता है :

"अगर यीशु सच में परमेश्वर का भेजा हुआ है, तो वह इसे रोकता क्यों नहीं? वह अपने दुश्मनों को खुद को ले जाने क्यों दे रहा है?"

इस उलझन में, पतरस ने वही किया जो उसे स्वाभाविक लगा – जोर-जबरदस्ती। यह प्रतिक्रिया पूरी तरह से इंसानी है। जब लोग डरा हुआ या बेबस महसूस करते हैं, तो वे अक्सर कुछ करके हालात पर काबू पाने की कोशिश करते हैं, भले ही वह उनके गहरे विश्वासों के खिलाफ ही हो।

वफ़ादारी का एक गलत कदम :
पतरस का इरादा बुरा नहीं था। वह मलखुस के प्रति नफरत से नहीं, बल्कि यीशु के प्रति वफ़ादारी से प्रेरित था। हालाँकि, अच्छे इरादे हमेशा अच्छे काम नहीं करवाते।

यह पल एक जरूरी सच्चाई को दिखाता है :
बिना समझ के वफादारी नुकसान पहुँचाने वाली हो सकती है।

पतरस को लगा कि वह यीशु की रक्षा कर रहा है, फिर भी उसके काम सीधे तौर पर यीशु की शांति, माफी और अहिंसा की शिक्षाओं के खिलाफ थे।

कान पर ही क्यों?
यह बात कि पतरस ने कान पर वार किया, बहुत मायने रखती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह इस बात का संकेत हो सकता है कि पतरस कोई प्रशिक्षित योद्धा नहीं था – हो सकता है कि उसने सिर पर निशाना लगाया हो और चूक गया हो, या बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में काम किया हो। प्रतीकात्मक रूप से, कान को चुनने का एक गहरा अर्थ है। कान सुनने और समझने से जुड़ा होता है। हिंसा के पलों में, लोग अक्सर एक-दूसरे को सचमुच 'सुनने' की क्षमता खो देते हैं।

इसलिए, यीशु द्वारा कान को ठीक करने को न केवल शारीरिक स्वास्थ्य की बहाली के रूप में देखा जा सकता है, बल्कि समझ, संवाद और संतुलन की बहाली के रूप में भी।

यीशु की अद्भुत प्रतिक्रिया
जो बात इस पल को असाधारण बनाती है, वह है यीशु की प्रतिक्रिया।

पतरस की तारीफ करने के बजाय, उसने हिंसा के इस कृत्य की निंदा की। मत्ती के सुसमाचार में, उसने कहा :

"जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही नष्ट किये जाएँगे।"

यह महज एक चेतावनी से कहीं बढ़कर है – यह एक सिद्धांत है। हिंसा अक्सर और अधिक हिंसा को जन्म देती है, जिससे एक ऐसा चक्र बन जाता है जिसे तोड़ना मुश्किल होता है।

फिर, लूका के सुसमाचार के अनुसार, यीशु ने मलखुस को ठीक किया – वही व्यक्ति जो उसे गिरफ्तार करने आया था।

इस कार्य ने पूरी स्थिति को ही बदल दिया :
- टकराव को बढ़ाने के बजाय, यीशु ने उसे शांत किया।
- किसी का पक्ष लेने के बजाय, उसने सभी के प्रति करुणा दिखाई।

पतरस के लिए एक निर्णायक मोड़ :

यह पल पतरस की बड़ी यात्रा का एक हिस्सा बन जाता है। इसके तुरंत बाद, उसने तीन बार यीशु को जानने से इनकार कर दिया।

जब इन घटनाओं को एक साथ देखा जाता है, तो ये पतरस की अस्थिरता को उजागर करती हैं:
- सबसे पहले, आवेगपूर्ण आक्रामकता (मलखुस पर हमला करना)।
- फिर, भयभीत होकर इनकार करना (सार्वजनिक रूप से यीशु को अस्वीकार करना)।

यह दोनों कार्य भ्रम और समझ की कमी से उत्पन्न होते हैं।

फिर भी पतरस की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। पुनरुत्थान के बाद, वह एक ऐसे नेता के रूप में विकसित हुआ जो विश्वास, सहनशीलता और शांति की शिक्षा देता है। इससे पता चलता है कि उसने अपनी असफलताओं से सीखा – जिसमें यह पल भी शामिल है।

बड़ा संदेश
यह कहानी सार्वभौमिक मानवीय संघर्षों की बात करती है :
- ***हमें अन्याय पर कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिए?***
  क्या हमें तुरंत प्रतिक्रिया देनी चाहिए, या कोई उच्च मार्ग अपनाना चाहिए?
- ***सच्ची वफादारी कैसी दिखती है?***
  क्या यह अंधा बचाव है, या गहरे मूल्यों के साथ तालमेल बिठाना है?
- ***क्या हिंसा कभी सचमुच समस्याओं का समाधान कर सकती है?***
  यह कहानी इस विश्वास को चुनौती देती है कि बल ही सबसे अच्छा उत्तर है।

पतरस मानवीय स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है – भावुक, दोषपूर्ण, और अच्छे इरादों के बावजूद अक्सर भटका हुआ। यीशु एक अलग मार्ग का प्रतिनिधित्व करता है: शांत, उद्देश्यपूर्ण, और खतरे का सामना करने पर भी करुणा द्वारा निर्देशित।

आज के समय में इसके मायने :
धर्म से परे भी, इस पल का एक शक्तिशाली अर्थ है। निजी, सामाजिक और राजनीतिक झगड़ों में, लोग अक्सर पतरस की तरह ही प्रतिक्रिया देते हैं – जल्दी में, भावनाओं में बहकर, और कभी-कभी हिंसक तरीके से।

यह कहानी एक अलग नजरिया अपनाने का सुझाव देती है :
- ठहरें
- समझने की कोशिश करें।
- इस तरह से काम करें जिससे नुकसान पहुँचाने का सिलसिला टूट जाए।

यह कमजोरी नहीं है। यीशु निष्क्रिय नहीं था – उसने हिंसा को ठुकराने का एक सोच-समझकर, हिम्मत भरा फैसला लिया था। ऐसा संयम दिखाने के लिए अक्सर बदले की भावना से कहीं ज्यादा ताकत की जरूरत होती है।

तो जब हम पूछते हैं, **"पतरस ने कान क्यों काट दिया?"** तो इसका गहरा जवाब यह है :

उसने प्यार, डर, उलझन और गलतफहमी - इन सभी भावनाओं के चलते एक साथ काम किया।

और इस कहानी के आज भी प्रासंगिक बने रहने का कारण केवल पतरस का काम ही नहीं है, बल्कि यीशु की प्रतिक्रिया है – जिसने हिंसा के एक पल को शांति, दया और सच्ची शक्ति के बारे में एक स्थायी सीख में बदल दिया।

काश परमेश्वर हम सबको आशीषित करे।

मेजर रॉबिन, *चर्च ग्रोथ सेक्रेटरी,*
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

The Father who Leads by Love

वह पिता जो प्रेम से नेतृत्व करता है।

पिताओं का दिन आभार व्यक्त करने का एक अवसर है – न केवल पालन-पोषण के लिए, बल्कि उनकी उपस्थिति, त्याग और दृढ़ता के लिए भी।

परमेश्वर का तरीका: प्रेम सबसे पहले

बाईबल के अनुसार पितृत्व की नींव प्रेम है। परमेश्वर स्वयं इसका पूर्ण आदर्श प्रस्तुत करता है। ***"जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।"*** (भजन संहिता 103:13)। परमेश्वर का प्रेम न तो कठोर है और न ही अति-छूट देने वाला; यह स्थिर, धैर्यवान और विश्वासयोग्य है।

अनुग्रह जो पुनर्स्थापित करता है।

अनुग्रह, प्रेम की सबसे शक्तिशाली अभिव्यक्तियों में से एक है। लूका 15:11- 32 में वर्णित पिता, अपने बच्चे की गलती से इनकार नहीं करता, फिर भी वह उसे ठुकराने के

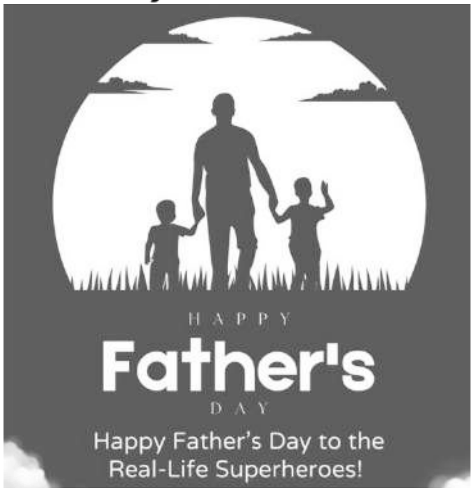

बजाय दया के साथ प्रतिक्रिया देता है। वह प्रतीक्षा करता है, देखता है, दौड़कर जाता है और उसे पुनः अपना लेता है।

यह छवि दर्शाती है कि जब बच्चे असफल होते हैं, तब पिताओं को किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिए। अनुग्रह पाप की अनदेखी नहीं करता, बल्कि वह पश्चाताप और विकास के लिए स्थान बनाता है। जो पिता प्रेम से नेतृत्व करते हैं, वे समझते हैं कि गलतियाँ सीखने के अवसर हैं, न कि शर्मिंदगी के बहाने। अनुग्रह के माध्यम से, बच्चे यह सीखते हैं कि असफलता से रिश्ते का अंत नहीं हो जाता।

उद्देश्यपूर्ण अनुशासन

पवित्र-शास्त्र कभी भी कठोरता या क्रोध-प्रेरित सुधार का समर्थन नहीं करता। इसके विपरीत, यह अनुशासन को एक प्रेमपूर्ण कार्य के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसका उद्देश्य विकास और बुद्धि प्रदान करना है:

"क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।" (इब्रानियों 12:6)।

इसी प्रकार, पिताओं को यह निर्देश दिया गया है: ***"हे बच्चे वालों, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, परन्तु प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो।"*** (इफिसियों 6:4)।

प्रेम द्वारा निर्देशित अनुशासन, उत्तरदायित्व सिखाते हुए भी सीमाएँ निर्धारित करता है। यह बच्चे के भविष्य के प्रति देखभाल, सही दिशा और समर्पण को व्यक्त करता है। जब पिता शांत और निरंतर भाव से अनुशासन लागू करते हैं, तो बच्चे सम्मान करना सीखते हैं-भयभीत होना नहीं-और यह समझते हैं कि नियम उनकी सुरक्षा के लिए ही बनाए गए हैं।

दैनिक नेतृत्व में करुणा

घर-परिवार में सच्चा नेतृत्व प्रभुत्व जमाना नहीं, बल्कि सेवा करना है। यीशु ने स्वयं नम्रता और त्याग के द्वारा नेतृत्व की परिभाषा को पुनः गढ़ा। जो पिता प्रेम से नेतृत्व करते हैं, वह अपने परिवार की भावनात्मक और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पहचानते हैं। करुणा का अर्थ है-सचेत रहना, सुलभ होना और दूसरों की पुकार पर तुरंत प्रतिक्रिया देना।

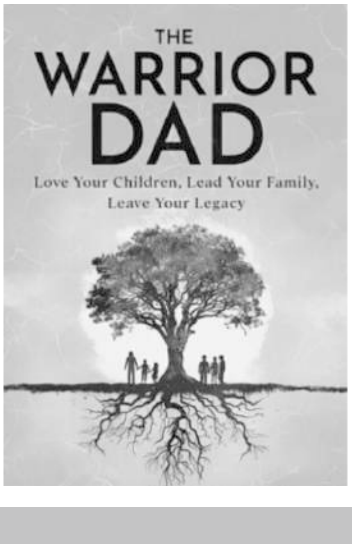

अपूर्ण पिता, विश्वासयोग्य परमेश्वर

पवित्र- शास्त्र पिताओं की कमियों के विषय में पूरी तरह ईमानदार है। अब्राहम को संघर्ष करना पड़ा, दाऊद से गलतियाँ हुई, और भी अनेक पिता अपनी भूमिका निभाने में कहीं न कहीं चूक गए। फिर भी, परमेश्वर उनके माध्यम से अपना कार्य करता रहा; यह हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में पूर्णता ही एकमात्र मापदंड नहीं है-बल्कि विश्वासयोग्यता ही सर्वोपरि है। जो पिता खुद को अपर्याप्त या बोझिल महसूस करते हैं, उनके लिए वचन प्रोत्साहन देता है: परमेश्वर माँगने वालों को ज्ञान प्रदान करता है (याकूब 1:5)। एक पिता की परमेश्वर की खोज करने, अपनी गलतियों को स्वीकार करने और प्रेम में बढ़ने की तत्परता, त्रुटिहीन प्रदर्शन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

सांत्वना का एक शब्द

पिताओं का दिन कुछ लोगों के लिए आनंदमय हो सकता है, साथ ही साथ कुछ के लिए पीड़ादायक भी-उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने पिता को खोया है, उनकी अनुपस्थिति का अनुभव किया है, या जिनके मन में घाव हैं। बाईबल हमें कोमल भाव से याद दिलाती है कि ***"परमेश्वर अनाथों का पिता है"*** (भजन संहिता 68:5)। उसका प्रेम चंगा करता है, पुनर्स्थापित करता है और मानवीय असफलताओं से उत्पन्न हर कमी को भर देता है।

प्रेम से नेतृत्व करने वाला पिता भौतिक सुविधाओं से कहीं अधिक महान विरासत छोड़ जाता है। अनुग्रह के द्वारा वह क्षमा करना सिखाता है। अनुशासन के द्वारा वह चरित्र का निर्माण करता है। करुणा के द्वारा वह परमेश्वर के हृदय को दर्शाता है।

पिताओं के इस दिन पर, हम पिताओं का सम्मान करते हैं - पूर्णता के लिए नहीं, बल्कि मसीह के प्रेम के समान प्रेम करने की उनकी प्रतिबद्धता के लिए। हर पिता को अपने पवित्र कर्तव्य में प्रोत्साहन मिले, और हर परिवार प्रेम से प्रेरित नेतृत्व का आशीर्वाद प्राप्त करे। परमेश्वर आपको आशीष दे।

श्रीमती सीमा खोखर, *आईटी कोऑर्डिनेटर,*
उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

Bearing The Fruits / फल लाना

बाईबल पाठ : यूहन्ना 15:1-8 मुख्य आयत 15:5

"मैं दाखलता हूँ; तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, तो तुम बहुत फल लाओगे; क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

प्रिय साथियों, यदि आप बाजार जाते हैं, तो आप किसी पेड़ को उसके पत्तों के लिए नहीं खरीदते-आप उसे उसके फल के लिए खरीदते हैं। परमेश्वर भी सिर्फ हमारे कामों से प्रभावित नहीं होता बल्कि वह फल ढूंढता हैं। आज प्रभु हमसे पूछता है : ***"तुम्हारा फल कहाँ है?"***

यीशु ने यह शब्द यूहन्ना 15 में, अपने शिष्यों के साथ बिताई अपनी अंतिम रात को कहे थे। वह जानता था कि उसे दबाव, जुल्म और भटकाव का सामना करना पड़ेगा। उसका उत्तर सरल था: मुझसे जुड़े रहो, और तुम फल लाओगे।

1. फल का स्रोत-मसीह से जुड़ाव - यूहन्ना 15:4-5

किसी डाली का अपना कोई जीवन नहीं होता। वह केवल इसलिए फल देती है क्योंकि वह दाखलता से जीवन प्राप्त करती है। आप एक सूखी डाली पर रस्सी से सेब बाँध सकते हैं। दूर से देखने पर बेशक वह फलदार लगेगी, लेकिन उसमें कोई जीवन नहीं होता। यही वह धर्म है जिसमें कोई सच्चा रिश्ता नहीं होता।

हमारा प्रार्थना का जीवन, वचन में बिताया गया समय, और आज्ञाकारिता-यह केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं हैं। यह जीवन-धारा (sap line) हैं। जब हम मसीह से कट जाते हैं, तो हो सकता है कि हम दूसरों को व्यस्त दिखाई दें, लेकिन हम फल लाना बंद कर देते हैं।

स्वयं से पूछें : - क्या मैं सचमुच कुछ उत्पन्न कर रहा हूँ, या मैं केवल दिखावा कर रहा हूँ?

2. फल का स्वभाव - मसीह का चरित्र - गलातियों 5:22-23

परमेश्वर हमसे यह नहीं कहता कि हम सबसे पहले चमत्कार उत्पन्न करें। वह चाहता है कि हम चरित्र का निर्माण करें।

प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम। यह आत्मा का फल है जो तब बढ़ता है जब हम मसीह में बने रहते हैं।

एक संतरे के पेड़ को संतरे पैदा करने के लिए कोई संघर्ष नहीं करना पड़ता। वह बस अपनी जड़ों में स्थिर रहता है। फल उसका स्वाभाविक परिणाम होता है।

घर पर, अपनी कोर में, अपने विभाग या कार्यस्थल पर - क्या लोग आप में आत्मा के फल का अनुभव कर पाते हैं?

मत्ती 7:20 कहता है, "उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।" आपका फल ही आपकी गवाही है।

3. फल का उद्देश्य - परमेश्वर की महिमा- यूहन्ना 15:8 ,16

यीशु ने कहा, ***"इससे मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत फल लाओ, और मैंने तुम्हें चुना और नियुक्त किया ताकि तुम जाकर फल लाओ - ऐसा फल जो बना रहे।"***

हम खुद को साबित करने के लिए फल नहीं लाते। हम दूसरों को खिलाने और परमेश्वर की महिमा करने के लिए फल लाते हैं।

आम का पेड़ कभी अपने आम खुद नहीं खाता। फल हमेशा दूसरों के लिए होता है। आपका धीरज आपके परिवार को आशीष देता है। आपकी ईमानदारी आपके कार्यस्थल पर प्रभाव डालती है। आपका प्रेम लोगों को मसीह के पास लाता है।

परमेश्वर मौसमी फल नहीं मांगता है। वह ऐसा फल चाहता है जो बना रहे - बदले हुए जीवन, बनाए गए चेले, और बदले हुए समुदाय।

4. फल की प्रक्रिया - पिता द्वारा छंटाई - यूहन्ना 15:2

हर वह डाली जो फल लाती है, वह उसकी छंटाई करता है ताकि वह और भी अधिक फलदायी हो सके। छंटाई से दर्द होता है, लेकिन यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर काम कर रहा है।

कभी-कभी परमेश्वर अच्छी चीजों को हटा देता है ताकि हम **"परमेश्वर-जैसी"** चीजें उत्पन्न कर सकें। छंटाई के मौसम से नाराज न हों। इसका मतलब है कि फसल आने वाली है।

निष्कर्ष :

कलीसिया, तीन प्रकार की डालियाँ होती हैं :

1. कोई फल नहीं - हटा दी जाती है।
2. कुछ फल - छंटाई की जाती है।
3. बहुत फल - परमेश्वर की महिमा होती है।

प्रार्थना : प्रभु यीशु, हम तो बस डालियाँ हैं। तेरे बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते। अपनी खुद की ताकत से फल लाने की कोशिश करने के लिए हमें क्षमा कर। हमें अपने करीब खींच। जिस चीज को हटाने की जरूरत है, उसकी छंटाई कर। हमें अपनी आत्मा से भर दे, और हमारे जीवन को ऐसा फल लाने दे जो बना रहे, तेरी महिमा के लिए। आमीन।

मेजर हबीब मसीह, *डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर*
पठानकोट

Father's Day / फादर्स दे (पिता का दिन)

भारत में फादर्स दे (पिता का दिन) पहली बार कब मनाया?

इसके बारे में कोई आधिकारिक सूत्र (अभिलेख) उपलब्ध नहीं है, क्योंकि यह परंपरा अमेरिका से शुरू होकर धीरे-धीरे भारत में लोकप्रिय हुई है। हालांकि भारत में **फादर्स दे (पिता का दिन)** का चलन मुख्य रूप से पिछले दो-तीन दशकों में बढ़ा है। जिसे जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है।

His Sacrifices and Love are uncountable. So He deserve more.

- **मूल शूरूआत :** पहला **फादर्स दे (पिता का दिन)** 19 जून 1910 को संयुक्त राज्य अमेरिका के वाशिंगटन में मनाया गया था।
- **अवधारणा :** इसे सोनोरा स्मार्ट डेड (Sanora Smart Dadd) ने अपने पिता को सम्मानित करने के लिए शुरू किया था, जिन्होंने अकेले ही 6 बच्चों का पालन-पोषण किया था।
- **आधिकारिक मान्यता (अमेरिका) :** 1972 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने इसे आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।
- **भारत में चलन :** भारत में भी यह पश्चिमी देशों की तरह जून के तीसरे रविवार का ही मनाया जाता है।

1. पिता का भूमिका क्या है **:** बच्चों और घर के लिए पिता का एक बहुत बड़ी भूमिका होती है। एक पिता अपने पूरे परिवार को बहुत प्यार करता है। पिता अपने परिवार के लिए बहुत मेहनत करता है और उनकी हर जरूरत को पूरा करता है।
2. लूका 15:20, तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला; अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौडकर उसे गले लगाया और बहुत प्यार किया।
3. पिता अपने बच्चों के लिए एक हीरो होता है। पिता अपने बच्चों के लिए बलिदान देता है जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमें बचाने के लिए अपना बलिदान दिया था।

4. पिता अपने बच्चों के लिए फिकर करता है, मरकुस 5:21-43 याईर नामक आराधनालाए के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर उसके पाँवों पर गिरा। इस वचन में हम देखते हैं कि एक पिता ने कैसे अपने जीवन में अपनी बीमार बेटी को बचाने के लिए यीशु से कह रहा था और जो उसकी बेटी मर गई थी। यीशु ने फिर उसके जिन्दा किया।
5. पिता हमेशा अपने जीवन में अपने परिवार को खुशहाल देखना चाहता है। जैसे हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर अपने पूरे संसार को खुशहाल देखना चाहता है।

- पिता हर फर्ज निभाता है।
- जीवन भर कर्ज चुकाता है।
- बच्चों की हर एक खुशी के लिए अपने सुख भूल जाता है।

"हैप्पी फादर्स दे (पिता का दिन)"

लैफ्ट. अलीशा
गुज्जा पीर कोर, डेरा बाबा नानक डिवीजन

The Power of Cross
क्रूस की शक्ति : पाप से मुक्ति का मार्ग

क्रूस मानव इतिहास का सबसे अद्‌भूत और परिवर्तनकारी चिन्ह है। पहली दृष्टि में यह दुःख, अपमान और मृत्यु का प्रतीक लगता है, परन्तु बाईबल हमें सिखाती है कि यही क्रूस पाप से मुक्ति और नये जीवन का मार्ग है।

मनुष्य अपने पापों के कारण परमेश्वर से दूर हो गया है। ***"क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।"*** (रोमियों 3:23)

पाप का परिणाम मृत्यु है, और मनुष्य अपने बल से इससे छुटकारा नहीं पा सकता। ***"क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है.... "*** (रोमियों 6:23)

परन्तु परमेश्वर ने अपने अनन्त प्रेम में हमारे लिए एक मार्ग तैयार किया जो क्रस का मार्ग है।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया.... " (यूहन्ना 3:16)

यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया। ***"वह हमारे ही पापों को अपने शरीर पर लिये क्रूस पर चढ़ गया..... "*** (1 परतस 2:24)

यदि हम मुक्ति फौज के सिद्धांत संख्या छः को देखें, ***"हम विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु मसीह ने अपने दुःख और मृत्यु के द्वारा सारे संसार के लिए एक प्रायश्चित किया, इसलिए कि जो चाहे वह बच सकता है।"***

TSA का छठा सिद्धांत हमें यह सिखाता है कि उद्धार परमेश्वर की ओर से एक अनमोल उपहार है, जो हमें हमारे कर्मों से नहीं, बल्कि यीशु मसीह के अनुग्रह से मिलता है।

उद्धार का अर्थ :
- पाप से छुटकारा
- परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप
- नया जीवन प्राप्त करना।

क्रूस की शक्ति यही है कि वह पाप की जंजीरों को तोड़ देता है। जो कोई विश्वास के साथ यीशु मसीह के पास आता है, वह क्षमा और नया जीवन प्राप्त करता है।

"इसलिए अब जो मसीह में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।" (रोमियों 8:1)

क्रूस हमें केवल पाप से छुटकारा ही नहीं देता, बल्कि हमें एक नया जीवन भी देता है - एक ऐसा जीवन जो परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में चलता है।

"सो यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है।" (2 कुरिन्थियों 5:17)

इसलिए ***"क्रूस की शक्तिः पाप से मुक्ति का मार्ग"*** केवल एक संदेश नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए आशा है जो अपने जीवन में बदलाव चाहता है।

अंत में हमें इस सत्य को केवल सुनना ही नहीं, बल्कि स्वीकार करना चाहिए। जब हम विश्वास के साथ क्रूस के पास आते हैं, तब हमारा जीवन बदल जाता है और हम सच्ची स्वतंत्रता जो आत्मिकता से परिपूर्ण है का अनुभव करते हैं।

लैफ्ट. अनुज कुमार, *कोर कमांडिग ऑफिसर*
खैलम कोर, बरेली डिवीजन

अनुभव/गवाही/रिपोर्ट

International Day of Children and Youth 2026, Delhi Citadel Corps, New Delhi

मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि दिल्ली सिटाडल कोर में दिन रविवार तिथि 26.4.2026 को इंटरनेशनल डे ऑफ चिल्ड्रन एंड यंग पीपल मनाया गया, जिसकी अगुवाई मिस्टर प्रेशियस ने की और इस सभा में सभी यूथ के बच्चों ने हिस्सा लिया और उन्होंने अलग-अलग गतिविधियों द्वारा अपना योगदान दिया और प्रभु के नाम को ऊंचा किया। इस सभा में यूथ के बच्चों ने गीत गाए, प्रार्थना की और अपनी गवाही बांटी, सन्डे स्कूल के बच्चों के द्वारा action Song किया गया जिसमें उन्होंने यह बताया कि हमें प्रभु के साथ बने रहना है और उसकी रोशनी में चलना है। मिस्टर डेविड हंस के द्वारा परमेश्वर का पवित्र वचन बांटा गया जो के 1 तिमोथी 4:6-12 के ऊपर आधारित था, जो की बहुत ही प्रभावशाली था और सबों के लिए बड़ा ही प्रेरणादायक और समर्थ से भरा हुआ था। आखिरी गीत मिस्टर प्रेशियस के द्वारा गाया गया। जिसके दौरान लगभग 25 बच्चे और नौजवान दया आसन पर आए और उनके लिए आखिरी प्रार्थना मेजर राजू मसीह, टी.वाई.एस. ने की और और सभा को आशीष वचन के द्वारा समाप्त किया, उन्होंने बच्चों और नौजवानों को उत्साहित किया और कहा के आपको हमेशा अपने माता पिता और प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करना है। यह सभा दिल्ली सिटाडल कोर के लिए और प्यारी मुक्ति फौजी के लिए बहुत ही बरकत से भरी हुई थी।

परमेश्वर सभी बच्चों और नौजवानों को आशीष दे।

कैप्टन राजेश मसीह
दिल्ली सिटाडल कोर, नई दिल्ली

Bible Oratorical Contest at Corps Level, Kiyara Corps, Bareilly

प्रभु यीशु मसीह के नाम में आप सब को सलाम, सबसे पहले में खुदा को धन्यवाद करती हूँ और उसके बाद अपने टी. एच.क्यू./डी.एच.क्यू. अगुवों का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने यह Corps Level Bible Oratorical Contest को संयोजित करने का मौका दिया। यह बहुत ही अदभूत समय था। 14 मार्च, 2026 का दिन शनिवार शाम 4.00 से 06.00 तक हमने इस प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें हमारी कोर के स्थानीय आफिसरों के साथ साथ कोर आफिसर भी शामिल हुए। हमने तीन समूह बनाए, जिसको सिस्टर आशा (एच.एल.एस.) कोर सारजेन्ट, दीदार मसीह, कोर सेक्रेटरी भाई गुलशन मसीह, लैफ्ट. विशाल राज, लैफ्ट. अलीशा ने संयोजित किया। सण्डे स्कूल के बच्चों और यूवा लोगों ने भी इसमें हिस्सा लिया। और सभी बच्चों ने बहुत ही ज्यादा अच्छा योगदान दिया। बाद में सण्डे 15 मार्च को बच्चों को छोटे-छोटे उपहार देकर उनको प्रशंसा (Appreciate) किया गया। खुदा हमारी मुक्ति फौज और टी.एच.क्यू. को बहुत आशिष दे, जिन्होंने बच्चों को इसके द्वारा प्रोत्साहन (Encourage) किया।

लैफ्ट. अलीशा विशाल राज, *कोर कमांडिंग ऑफिसर,*
क्यारा कोर, बरेली डिवीजन

League of Mercy Meeting, Kiyara Corps, Bareilly Division

प्रभु यीशु मसीह के नाम में आप सब को सलाम। दिन शुक्रवार को हमने लीग ऑफ मर्सी की सभा रेखा के घर में की, उनकी बेटी खुशबू का रविवार को एक्सीडेंट हो गया था। लेकिन खुदा का इतना धन्यवाद कि इतने बड़ा सड़क पर एक्सीडेन्ट हुआ, लेकिन खुदा ने उसकी एक एक हड्डी को बचा के रखा। कुछ अन्दरूनी चोट आई है। इस सभा में लीग ऑफ मर्सी की सेक्रेटरी सिस्टर इन्दु, सिस्टर विमला आदि ने भाग लिया तथा लीग ऑफ मर्सी की सेक्रेटरी और लैफ्ट. अलीशा ने मिलकर प्रार्थना की और सभा को समाप्त किया, और यही दुआ की, खुदा जल्द से जल्द खुशबु का तन्दरूस्त करे, ताकि वो खुदा को जिन्दा गवाही देने वाली हो सके। खुदा आप सबको आशिष दे। आमीन

लैफ्ट. अलीशा विशाल राज, *कोर कमांडिंग ऑफिसर,*
क्यारा कोर, बरेली डिवीजन

International Day of Youth and Children

मुझे यह बताते हुये बेहद खुशी हो रही है कि खैलम कोर, बरेली डिवीजन में अंतराष्ट्रीय बाल एवं युवा दिवस बड़ी ही खुशी के साथ मनाया गया। कोर में मुख्य अतिथि की भूमिका में मेजर फिलिप नायक, डिवीजनल कमांडर और उनकी प्रिय पत्नी मेजर नओमी नायक, डी.डी.डब्ल्यू.एम., बरेली रहे। लैफ्ट. विनीता अनुज कुमार ने प्रार्थना करके सभा का आरम्भ किया। उसके उपरान्त लैफ्ट. अनुज कुमार, कोर कमांडिंग ऑफिसर ने समस्त प्रार्थना सभा का संचालन किया। जिसमें बच्चों, युवाओं तथा कलीसिया के सदस्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। बच्चों और युवाओं ने गीत, वचन, पाठ, नाटक तथा विशेष प्रस्तूतियों के माध्यम सं अपनी प्रतिभाओं को प्रकट किया। मेजर नओमी नायक ने अपना अनुभव लोगों के सामने साझा किया और युवाओं व बच्चों को प्रोत्साहित करते हुये कहा कि वह अपने जीवन को अनुशासन, विश्वास और सेवा के मार्ग में लगाएँ। मेजर फिलिप नायक, डिवीजनल कमांडर के द्वारा युवाओं, छोटे बच्चों और कलीसिया के सभी लोगों के लिए एक बहुत ही प्रभावशाली वचन पेश किया गया। सभा के अन्तिम गीत की अगुवाई डी.डी.डब्ल्यू.एम., मेजर नओमी नायक ने की, जिसमें लगभग पन्द्रह स्त्री और युवाओं ने स्वंय को दया आसन पर समर्पित किया। सभी बच्चों और युवाओं के लिए विशेष प्रार्थना लैफ्ट, अनुज के द्वारा की गई तथा उनके उज्जवल भविष्य के लिए आशिष मांगी गई। यह कार्यक्रम सभी के लिए प्रेरणा, आनन्द और जात्मिक उन्नति का कारण बना। बरकत के कलमें के साथ मेजर फिलिप नायक, डिवीजनल कमांडर ने प्रार्थना सभा को समाप्त किया।

खुदा आप सबको आशिष दे। आमीन

लैफ्ट. अनुज कुमार, *कोर कमांडिंग ऑफिसर,*
खैलम कोर, बरेली डिवीजन

My Testimony / मेरे जीवन का अनुभव

"परमेश्वर की वफादारी और क्षमा की शक्ति की एक गवाही"

हम वर्ष 2002 में मुक्ति फौज ट्रेनिंग कॉलेज आए और 18 अप्रैल 2004 को हमने अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया। उस धन्य दिन पर, हमें कमीशन दिया गया और मुरादाबाद के मिलक-झंडा कोर में हमारी पहली नियुक्ति हुई। इसके तुरंत बाद, 2005 में मेरी नियुक्ति मुरादाबाद सिटी कोर में हुई।

उसी वर्ष बाद में, मुझे अपने घर से दूर एक नई जिम्मेदारी मिली-कांचरापाड़ा, नॉर्थ 24 परगना (पश्चिम बंगाल)। यह एक छोटा सा कस्बा था, जहाँ ज्यादातर लोग बंगाली बोलते थे और बहुत ही प्यारे लोग रहते थे। मैंने वहाँ कोर ऑफिसर और प्रोजेक्ट मैनेजर (CDC) के तौर पर सेवा की। कोर के ज्यादातर सिपाही कांचरापाड़ा, बाघ मोड़ और हालीशहर के रहने वाले थे। वह सचमुच एक बहुत ही बढ़िया समय था, और हमने पूरी ताकत और लगन से काम किया।

कांचरापाड़ा में हमारी सेवा के दौरान, परमेश्वर ने हमें ईश्वरीय नेतृत्व का आशीर्वाद दिया। हमारे डिविजनल कमांडर, कमिश्नर लालजामलोवा और कमिश्नर नुई, परमेश्वर से डरने वाले और कृपालु अगुवे थे। लगभग आठ महीने बाद, हमें HRDI (भारत) में करिकुलम कोऑर्डिनेटर और WACI - कोयंबटूर - तमिलनाडु में असिस्टेंट के तौर पर एक नई नियुक्ति मिली।

यह समय हमारे जीवन में सीखने वाला समय था। HRDI और WACI कार्यालय में, हमने कमिश्नर विल्फ्रेड वरघीस और कमिश्नर प्रेमा विल्फ्रेड (अब रिटायर्ड) के साथ मिलकर काम किया, जो उस समय मेजर के पद पर थे। हमने उनके जीवन और नेतृत्व से बहुत कुछ सीखा। वह परमेश्वर के प्यारे और देखभाल करने वाले सेवक थे, और उनके उदाहरण ने हम पर गहरा प्रभाव डाला।

जब हम कोयंबटूर में थे, तो परमेश्वर ने हमारे परिवार को एक बेटी, अश्विनी मैसी का आशीर्वाद दिया। हम नियमित रूप से चिन्नायापालयम कोर में आराधना में शामिल होते थे, जो HRDI के सबसे नजदीक की कोर थी। जीवन बहुत ही सुचारू रूप से चल रहा था, और हमारे विश्वास की नींव बहुत मजबूत थी।

बाद में, मेजर विल्फ्रेड और प्रेमा का तबादला जिम्बाब्वे हो गया, और मुझे HRDI और WACI के प्रो-टेम (अस्थायी) प्रमुख के तौर पर जिम्मेदारियाँ सौंपी गई। इस दौरान, हमें कूनूर में रहने के लिए क्वार्टर दिया गया। वहाँ का ठंडा मौसम हमारे

लिए एक चुनौती बन गया, और आखिरकार हम वापस कोयंबटूर आ गए। जिंदगी भाग-दौड़ और संघर्षों से भरी थी, लेकिन हमने एक गहरा सच महसूस किया: जब परमेश्वर केंद्र में होता है, तो सब कुछ नियंत्रण में रहता है।

हमारा कार्यकाल पूरा होने के बाद, हमें कोलकाता में DYS और कोर ऑफिसर के तौर पर नियुक्त किया गया। 2011 में, मेरा तबादला मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश में हो गया, जहाँ मुझे फिर से DYS बनाया गया। इसके कुछ ही समय बाद, मुझे मुरादाबाद स्कूल के सुपरिटेंडेंट के तौर पर एक और नियुक्ति मिली, जबकि मेजर अनीता मैसी को प्रिंसिपल बनाया गया। परमेश्वर की दया से, स्कूल ने अच्छी प्रगति की, और छात्रों की संख्या बढ़कर 261+ हो गई।

2016 में, हमारा तबादला नई दिल्ली टेरीटोरियल मुख्यालय में हो गया। मैंने PRO के तौर पर सेवा दी, और मेजर अनीता को एजुकेशन सेक्रेटरी नियुक्त किया गया। एक साल बाद, 2018 में, हमें कोलकाता में नई नियुक्तियाँ मिलीं, जहाँ मैंने रेड शील्ड गेस्ट हाउस के सुपरिटेंडेंट के तौर पर सेवा दी।

यह मेरी जिंदगी की सबसे चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक थी। इमारत ढांचागत रूप से तैयार थी, लेकिन कई समस्याओं के कारण चालू नहीं थी। परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए, मैंने पहल की और इस चुनौती को स्वीकार किया। इमारत सालों से बंद पड़ी थी – धूल और मकड़ी के जालों से भरी हुई – और मैं खुद सबसे ऊपरी मंजिल पर रहता था, जबकि बाकी सभी मंजिलें बंद थीं।

परमेश्वर की कृपा से, हम छह महीनों के भीतर ही पश्चिम बंगाल सरकार से सभी जरूरी लाइसेंस को हासिल कर पाए जो उस संस्थान को सुचारु रूप से चलाने के लिए जरूरी थे।

6 दिसंबर 2018 को, एक ऐतिहासिक मील का पत्थर हासिल किया गया। रेड शील्ड गेस्ट हाउस का औपचारिक उद्घाटन कमिश्नर विल्फ्रेड वरघीस ने प्रार्थना के साथ किया; इस अवसर पर कर्नल याकूब मसीह और कई अन्य ऑफिसर भी मौजूद थे।

टेरीटोरियल मुख्यालय ने कामकाज शुरू करने में हमारा भरपूर सहयोग किया। जिसके फलस्वरूप हम सभी जरूरी चीजें – जैसे टीवी, रेफ्रिजरेटर, AC, फर्नीचर और मेहमानों के लिए अन्य सुविधाए – खरीदने में सक्षम हो सके। शुरुआत में, हमने पहली मंजिल पर छह कमरों को चालू किया। 15 महीनों के भीतर – यानी फरवरी 2020 में COVID-19 महामारी फैलने से पहले ही – सभी कमरे पूरी तरह से सुसज्जित हो चुके थे; उनमें AC, गीजर, बेहतरीन गद्दे, सजावट का सामान और कुछ कमरों में तो लॉकर भी लगवा दिए गए थे। रेड शील्ड सचमुच अपनी पूरी शान के साथ चमकने लगा था।

COVID काल के दौरान, हमारा तबादला बटाला, पंजाब में हो गया, जहाँ मैंने सुपरिटेंडेंट के तौर पर और मेजर अनीता ने बटाला स्कूल की प्रिंसिपल के तौर पर सेवा दी। स्कूल सिर्फ 10वीं क्लास तक था, लेकिन हमने पूरी लगन से काम किया और 12वीं क्लास तक CBSE की मान्यता प्राप्त हुई। स्कूल का रिजल्ट 100% हो गया और छात्रों की संख्या बढ़कर 561 से ज्यादा हो गई। स्कूल का इंफ्रास्ट्रक्चर भी काफी बेहतर हुआ – टाइल का काम, एक नया सुपरिटेंडेंट ऑफिस, फीस काउंटर और एक आधुनिक रिसेप्शन एरिया, ये सभी काम सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ पूरे किए गए।

फिर हमारी जिंदगी में एक बड़ी परेशानी सामने आयी लेकिन उसमे से भी परमेश्वर ने हमें बहार निकाला। मैं उसके नाम को धन्यवाद देता हूँ।

इस अनुभव के जरिए, परमेश्वर ने हमें एक बहुत बड़ा सबक सिखाया: माफ करना। बाईबल हमें यह सिखाती है कि हमें माफ करना चाहिए, इसलिए नहीं कि यह आसान है, बल्कि इसलिए कि यह हमें आजाद करता है। मैंने मुआफ करने के द्वारा अंदरूनी शांति पायी।

इसके बाद, हमें एक बार फिर मुरादाबाद स्कूल में **"ऑफिसर-इन-चार्ज"** और **"प्रिंसिपल"** के तौर पर नियुक्त किया गया। एक साल बाद, हमें नई दिल्ली में अंतिम नियुक्ति मिली, जहाँ कमिश्नर वनलालफेला के ईश्वर-भय रखने वाले नेतृत्व में, मुझे **PRO**, **'एक्यूमेनिकल सेक्रेटरी'** और **'आपातकालीन राहत ऑफिसर'** की जिम्मेदारियाँ सौंपी गई।

निष्कर्ष :

- मैं अपनी पूरी यात्रा के दौरान परमेश्वर की वफादारी के लिए उसका धन्यवाद करता हूँ।
- मैं दुनिया भर और विशेष रूप से उत्तरी भारत टेरीटरी के अगुवों का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने हमें सेवा करने के अवसर दिए।
- **एक शब्द में, मेरी गवाही यह है: माफी देना ही जीवन की सबसे बड़ी ताकत है।**

परमेश्वर दुनिया भर में मुक्ति फौज को आशीष दे।

सारी महिमा और सम्मान परमेश्वर को ही मिले। आमीन।

मेजर अजीत मैसी

पी.आर.ओ. एवं एक्युमेनिकल ऑफिसर/इमरजेंसी एंड रिलीफ़ ऑफिसर, उत्तरी भारत टैरीटरी, नई दिल्ली

मुक्ति फ़ौज

उत्तरी भारत टैरीटरी का अधिकारिक अंग

RNI Regd. No. 27158/75

विलियम और कैथरीन बूथ : संस्थापक

लिंडन बकिंघम : जनरल

अन्तर्राष्ट्रीय हेडक्वार्टर्स

101, क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट,

लंदन EC4V 4EH, यू.के.

वनललफेला : *प्रकाशक*

वनललफेला : *टैरिटोरियल कमांडर*

अमरीक मसीह : *संपादक*

मैसी आर्ट प्रेस : प्रिंटिंग प्रेस

मुक्ति समाचार मासिक प्रकाशित होता है।

एक कॉपी रु. 12.00

वार्षिक अंशदान भारतीय **रु. 144.00**

मुक्ति फ़ौज, उत्तरी भारत टैरिटरी,

नई दिल्ली के पक्ष में मनीआर्डर या डिमांड ड्राफ्ट

डाक का पता : **मुक्ति फ़ौज**

उत्तरी भारत टैरिटरी, टैरिटोरियल हेडक्वार्टर्स

एच-15 ग्रीन पार्क एक्सटेंशन,

नई दिल्ली-110016, भारत

फ़ोन : +91-11-26167764

+91-11-26167763

ईमेल : int.mail@int.salvationarmy.org

int.editor@int.salvationarmy.org

बेबसाइट : www.salvationarmy.org@ind

हमारा उद्देश्य :

मुक्ति फौज एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है जो मसीही चर्च का एक अभिन्न अंग है, जिसकी आत्मिक प्रेरणा एक सुसमाचार, सामाजिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य सेवकाई में व्यावहारिक अनुप्रयोग है।

इसका लक्ष्य सभी लोगों को पवित्र-शास्त्र के माध्यम से खोजे गए और दूसरों के साथ शांति और सद्भावना में पवित्र जीवन द्वारा प्रदर्शित जीवित मसीह के साथ संबंधों में जीवन की पूर्णता प्राप्त करने में मदद करता है।

ACTIVITIES

TERRITORIAL SUPPORT VISIT BY INTERNATIONAL SECRETARIES AT INDIA NORTHERN TERRITORY

IS'S DISCUSSION WITH THE THQ OFFICERS AND STAFF

WOMEN'S MINISTRY
WITH COMMISSIONER MANI KUMARI DASARI, IS

CHILD DEDICATION - JALLANDHAR DIVISION

HOME LEAGUE RALLY 2026 - JASIDIH DISTT

PUBLIC MEETING JALLANDHAR DIVISION

CS & TSWM VISIT TO JALLANDHAR DIVISION

संस्थापिक : विलियम बूथ, जनरल : लिंडन बकिंघम, 101 क्वीन विक्टोरिया स्ट्रीट, लन्दन *प्रकाशक :* वनललफेला *प्रकाशित :* वनललफेला
मुद्रित : मुक्ति फौज, उत्तरी भारत टेरिटरी, एच-15, ग्रीन पार्क एक्स., नई दिल्ली-110016
संपादक : अमरीक मसीह मुद्रक : मैसी आर्ट प्रेस, आर.जेड. 317/20, तुगलकाबाद एक्स., नई दिल्ली-110019 आर.एन.आई. पंजीकृत सं. : 27158/75